साहित्य संहिता

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 0
June 2016

Available at http://sahityasamhita.org/

सुप्रभात

श्याम कुमार

भगवान के गले का हार बने फूलों से भगवान के चरणों में गिरे हुए फूलों ने सवाल किया , ...

..'क्यों रे भाइयो!

तुम भी फूल हो, हम भी फूल हैं|

पर भगवान के गले की सुंदरता बनने का सम्मान आपको ही क्यों मिला ?

बहुत सुंदर जवाब दिया उन फूलों ने , ,,,...यहाँ तक पहुँचने से पहले दिल को सुई से आरपार चीरकर निकलना होता है

सुप्रभात